□□□□□ □□□

जनसत्ता 20 जून, 2014 : आज की राजनीतिक बदलता स्वरूप अतीत की आंख से नहीं देखा जा सकता। जब भी हम पीछे देखते है तो बहुत से लोगों को □क स्वर्णमि युग दीख प□ता है। उसके आलोक में जब हम वर्तमान में होने वाले परविर्तनों को देखते है तो सब कुछ बुरा दीख प□ता है। प्रश्न यह है कि क्या हम फिर से इतिहास के अंधेरे गलियारे में लौटना चाहते है? या फिर हम वर्तमान के उन काले धब्बों की ओर अंगुली उठा रहे है, जो हमें पछि□ा बना□ हु□ है? जिस प्रकार मोदी आगे ब□ रहे है उससे लगता है कि वे वर्तमान के आधार पर देश का भविष्य ग□ना चाहते है, जो है उसमें से शुभ को स्वीकार करना चाहते है और जो विकृत है उसका परिहार या परिष्कार करना चाहते है। वे पछिला सब कुछ नेस्तनाबूत करने के पक्ष में नहीं है। वे आगे के रास्ते की खोज में है।

यही सही मार्ग है। वर्तमान को धरा-ध्वस्त कर उसके मलबे पर न□ भवन का निर्माण करने की आवश्यकता नहीं है। जब भी ऐसे प्रयास हु□ है वे सभी सफल नहीं हु□। साम्यवाद की हथौ□ी से टूटे हु□ और अपनी संस्कृति से भटके हु□ समाज आज फिर संक्रमण की स्थिति में आ ग□ है। चुनावी चर्चा और भाषणों में अतिशयोक्ति का होना और जनादेश मिलने पर राजकाज संभालना दो अलग-अलग बातें है। शासन में फेर-बदल तो होंगे ही, पर साथ में नैरंतर्य का बना रहना भी जरूरी है। आखिर आज का भारत 1947 के भारत से बहुत भिन्न है और कई मायनों में श्रेष्ठ भी है। न□ शासन का ध्येय यह होना चाहि□ कि समाज के विकृतियों को दूर करे और विकास के मार्ग की नई दिशा की खोज करे और उस पर अग्रसर हो। मोदी सरकार के प्रारंभ के ये दिन यही आशा जगाते है। देखना होगा कि कितना हो पाता है।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद जो आशा की लहर चली थी वह कालांतर में निराशा के सिलसिले में परिणत हो गई। □क ओर तो लोगों की आशा□ और अपेक्षा□ ब□ती गई तो दूसरी ओर सत्तासीन लोगों में स्वार्थ का फेविकोल लगता रहा। केंद्र में कुछ अपवादों को छो□ कर कांग्रेस का वर्चस्व दशकों तक बना रहा। राज्यों में परिवर्तन तो हुआ, पर उन्हें भी केंद्र की चाबी ही चलाती रही। यह सचमुच पहली बार हुआ है कि अन्य यानी कोई गैर-कांग्रेसी पार्टी पूरे बहुमत के साथ केंद्र में सत्तासीन हुई है। यों केंद्र में यह भाजपा का दूसरा दौर है। पहली दफा जब केंद्र में सत्ता□ू हुई थी, तो करीब दो दर्जन दलों का गठबंधन बनाना प□ा था। फिर, उसके बाद जो दूसरी सरकारें बनीं, चाहे वे संयुक्त मोर्चे □ तीसरे मोर्चे की थीं या कांग्रेस की, गठबंधन के सहारे ही बनीं। पछिले तीन दशक में यह पहली बार हुआ कि किसी दल को अपने बूते बहुमत हासिल हुआ है। यह भाजपा की अपूर्व सफलता है।

आज कांग्रेस में मौन छाया हुआ है और भाजपा नई ऊर्जा के साथ केंद्र की बागडोर संभाले हु□ है। निश्चित ही नई अपेक्षा□ जागी है।

□क जीवंत समाज के ला□ यह आवश्यक है कि वह परिवर्तन को प्रश्रय दे। अवश्य ही संस्कृति के विराट आवागमन पर रोक लगाते है। उत्साह में हमने विगत में बाहर से कई मूल्यों, संस्थाओं, और व्यवहारों का आयात किया और हमारी समृद्ध संस्कृति ने उन्हें अपने ढंग से ही अंगीकार या फिर अस्वीकार किया। यह हमारी संस्कृति का लचीलापन है कि हम परिवर्तन के थपे□ों के बीच भी अपना अस्तित्व बना□ रख सके।

आज की बदली हुई परिस्थिति में स्वतंत्रता संग्राम की पी□ी के नेताओं का लोप होता जा रहा है। उनके नाती-पोतियों के जरि□ कुछ परिवार फिर से राजवंश का-सा व्यवहार करने लगे है। इस बीच कांग्रेस के बिखरने से राजनीतिक दलों की संख्या ब□ी है, साथ ही साथ उभय भावित भी- कभी कांग्रेस के साथ-साथ कभी अलग-अलग। प्रांतीय राजनीति का आविर्भाव भी हुआ है। जो गैर-कांग्रेसी नेता प्रधानमंत्री बने उनमें से वाजपेयीजी और मोदीजी को छो□ कर

सभी कांग्रेस से टूटे हु□ लोग थे□ इसी काल में जब गैर-राजवंशी कांग्रेसी नेताओं ने प्रधानमंत्री की कुर्सी संभाली तभी देश उदारीकरण की ओर ब□ा और आज वैश्वीकरण के अगुआओं में गिना जाता है□

जब दुनिया बीसवीं सदी की समाप्ति के समीप थी तब विकास प्रक्रिया के अवदानों का लेखा-जोखा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लिया गया□ कोपेनहेगेन में 1995 में सामाजिक विकास का विश्व शिखर सम्मेलन हुआ□ उस सम्मेलन में यूनेस्को की ओर से मुझे संयोजन का अवसर मिला□

इस सम्मेलन में पहली बार यह माना गया कि आर्थिक विकास अपने आप में महत्त्वपूर्ण नहीं है; उसे सामाजिक विकास के हित में कार्य करना चाहि□ यह कहा गया कि पिछले वर्षों में आर्थिक विकास तो हुआ, पर सभी देश सामाजिक विकास की दृष्टि से पिछ□ ही रहे□ खासतौर से तीन बिंदुओं पर चिंता व्यक्त की गई: ब□ती बेरोजगारी, भीषण गरीबी, और सामाजिक विघटन□ यह स्वीकार किया गया कि सामाजिक विकास की समस्या सार्वभौमिक है□ वह सर्वत्र है, लेकिन इस घोर समस्या का समाधान प्रत्येक संस्कृति के संदर्भ में खोजना चाहि□ □ किसी तरह से तथाकथित गुजरात मॉडल का भी यही अभिप्रेत है□ हमें प्रादेशिक संस्कृति और भूगोल के संदर्भ में समाधानों की खोज करनी होगी□ मनरेगा जैसी अखिल भारतीय योजनाओं की विफलता का भी यही कारण है□

इसी सम्मेलन में भारत ने यह घोषणा की थी कि वह अपने सकल घरेलू उत्पाद का छह प्रतिशत शिक्षा पर व्यय करेगा□ लेकिन 1995 में दिया गया यह वचन अब भी अधूरा है□ इतना होते हु□ भी हमारी साक्षरता का प्रतिशत निरंतर ब□ रहा है, पर उच्च शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है□ इस ओर हमें तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है□

नई सरकार ने शासन सुधार के लि□ आवश्यक कदम उठाना प्रारंभ कर दिया है□ खुद प्रधानमंत्री सरकार के विभिन्न महकमों की कार्य-प्रणाली समझ रहे हैं□ रणनीतिक कक्ष (वार रूम) में बैठकें होने लगी हैं□ भाई-भतीजावाद को रोकने के लि□ कदम उठा□ जा रहे हैं□ □ किसी ओर नया शक्तिशाली युद्धपोत राष्ट्र को समर्पित किया जा रहा है, तो दूसरी ओर कश्मीर के सुरक्षा संबंधी पहलुओं का मुआयना किया जा रहा है□ प्रधानमंत्री पड़ोसी देशों से संबंध बेहतर बनाने की यात्रा पर चल पड़ी है, और शुरुआत हुई है पड़ोसी देश से□ भूटान से भारत और भारत से भूटान का अनुप्रास मैत्री का नया अलंकरण बना है□

ऐसे अवसरों पर मीडिया की भी ब□ी जिम्मेदारी है□ जो कुछ दर्शनीय है उसे बाहरी दुनिया के लि□ वर्णित करने की हो□ मेरी राय में गलत है□ प्रधानमंत्री की गुप्त बैठकों का जिक्र करना क्यों आवश्यक है? फिर जब प्रकट ही हो गया तो गुप्त क्या रहा? मीडिया की आपसी हो□ में देश-हित की अनदेखी नहीं होनी चाहि□ □

यह सही है कि बहुत सारी चीजें हो रही हैं और आगे भी होती रहेंगी□ उन्हें पंद्रह-बीस दिन के कार्यकाल से आंका नहीं जा सकता□ जिस प्रकार अरविंद केजरीवाल के उनचास दिनों के कामकाज को पंचवर्षीय दर्पण में देख कर झुठलाना गलत था, वैसे ही पंद्रह-बीस दिनों के मोदी-राज की समीक्षा करना अनुचित होगा□ करिश्मे को रूटीन में बदलने दीजि□ □

महत्त्वपूर्ण यह है कि ढीली पड़ी सारी सरकारी मशीन में चुस्ती आई है□ कुछ लोग बदले हैं तो कुछ के कार्य-क्षेत्र का विस्तार हुआ है- कम मंत्री ज्यादा महकमे! जाते-जाते पिछली सरकार ने जो निर्णय कि□ उनका पुनरीक्षण स्वाभाविक भी है और वांछनीय भी□

जसि प्रकार राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री पद संभालते ही सबसे पहले शक्षिा के क्षेत्र की समीक्षा करवाई वैसे ही पुनरीक्षण की आज फरि आवश्यकता है□ जहां □क ओर भारी-भरकम फीस लेकर नजिी संस्था□ं वदि्यार्थयों को आकर्षति कर रही हैं वहीं सरकारी शक्षिण संस्थाओं में शक्षिकों की अनुपस्थति, घसि-पटि पाठ्यक्रम, कर्मचारयों की अकर्मण्यता और भ्रष्ट राजनीत चिंता के वषिय हैं□ पछिले वर्षों में कई आइआइटी और आइआइ□म खुले हैं, पर वे अब भी नषि्क्रयि हैं□

हर राज्य में □म्स खोलने की बात की जाने लगी है, पर दल्लिी के □म्स का हाल यह है कि डॉ मनमोहन सहि का इलाज करने के लि□ मुंबई के नजिी अस्पताल से डॉक्टर बुलाना प□ा□ वाजपेयीजी के घुटनों का स्थानापन्न भी मुंबई के नजिी अस्पताल में हुआ, और कयिा भारतीय मूल के अमेरकिी डॉक्टर ने□ दल्लिी के नेतागण अपने इलाज के लि□ अपोलो या गु□गांव स्थति मेदांता में जाते हैं, और मरणासन्न नरि्भया को सगिापुर ले जाया जाता है□ वयोवृद्ध मंत्री शीशराम ओला की मृत्यु भी मेदांता में हुई□ नक्सलयिों की गोलयिों के शकिार छत्तीसग□ के कांग्रेसी नेता वदि्याचरण शुक्ल का उपचार भी मेदांता में हुआ, न कि □म्स में□ क्या छव िहोकर रह गई है □म्स की? जो कभी शहर से दूर गनिा जाता था वह □म्स आज शहर की गंदगी से घरिा हुआ है और लोगों की पहली पसंद नहीं रह गया है□

यही हाल वशि्ववदि्यालयों का है□ कई प्रदेशों में कुलपत िकी कुर्सी की नीलामी होती है□ वह व्यक्त ि इस पद को प्राप्त करता है, जो □क करो□ के आसपास गुप्त धन नयिोक्ता को देने की स्थत ि में होता है□ लेक्चरर तक कुलपत ि बन जाते हैं□ इसी प्रकार अनुदान देने वाली शोध परषिदें खुल कर जातवािद को प्रश्रय दे रही हैं□ करो□ों रुपया उन लोगों या संस्थाओं पर लुटा रही हैं, जो शोध के नाम पर शून्य हैं□ ऐसी संस्थाओं का बहुलीकरण का औचत्यि ठीक से आंकने की आवश्यकता है□

मेरा मानना है कि अच्छे भवषि्य के नरि्माण के लि□ हमें शक्षिा पर बल देना होगा□ शोध और उच्च शक्षिा में बौद्धकि योग्यता की आवश्यकता होती है□ अब तक हमारा जोर प्राथमकि शक्षिा और प्रौ□ शक्षिा पर रहा है और उच्च शक्षिा को वरीयता देने से हम मुकरते रहे हैं□ सूचना क्रांत ि के इस युग में उच्च शक्षिा की अवहेलना आत्मघाती सद्धि होगी□ हमारी नई शक्षिामंत्री को इस संकट से उबरने के लि□ ठोस कदम उठाने होंगे□ हम सबकी नजर अब आगत पर टकिी है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta